Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

हिन्दी साहित्य में युग प्रवर्तक : भारतेन्दु हरिश्चंद्र

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

हिन्दी साहित्य में युग प्रवर्तक : भारतेन्दु हरिश्चंद्र

Dr. Priyanka Kumari*

M.A., Ph.D., University Hindi Department, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

सार-संक्षेप – ***हिन्दी साहित्य के आधुकि काल में गद्य साहित्य का आरंभ संवत्***-1860 ***के निकट चार विद्वानों- मुंशी सदासुखलाल, इशाअल्ला खाँ, लल्लू लाल और सदल मिश्र की कृतियों द्वारा हुआ। परंतु इन्होंने केवल गद्य के नमूने ही प्रस्तुत किये, इनमें से किसी को भी भविष्य में गद्य साहित्य के लिए कोई भी आदर्श स्थापित करने या निर्देश करने का यश प्राप्त नही हुआ। यह यश अथवा श्रेय इनके 70-72 वर्ष पश्चात् भारतेन्दु जी को आधुनिक गद्य भाषा के स्वरूप प्रतिष्ठापक तथा साहित्य प्रवत्तक के रूप में प्राप्त हुआ।[1]***

हरिश्चंद्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा पड़ा। उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता मधुर और स्वच्छ रूप दिया, उसी प्रकार हिन्दी-साहित्य को भी नए मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया। उनके भाषा संस्कार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया और वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रर्वत्तक माने गए। भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी गद्य के ही नही अपितु आधुनिक काल के जनक भी कहे जाते है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारतेन्दु जी ने साहित्य के विविध् क्षेत्रों में मौलिक एंव युगान्तकारी परिर्वतन किये और हिन्दी साहित्य को नवीन दिशा प्रदान की। नवयुग के प्रर्वत्तक भारतेन्दु जी का हिन्दी साहित्यकारा में उदय ने निश्चय ही उस पूर्णचंद्र की भांति हुआ जिसकी शांत, शीतल, कान्तिमयी आभा से दिगवधुंए आलोकित हो उठती है। निश्चय ही उनकी उपाधि भारतेन्दु-युगप्रर्वत्तक सार्थक एवं सटीक है।

शब्द-कुंजी – ***प्रतिष्ठापक: परिमार्जित: दिगवधु: कान्तिमयी।***

----------X----------

भारतेन्दु ने न केवल नई विधाओं का सृजन किया बल्कि वे साहित्य की विषय-वस्तु में भी नयापन लेकर आए, इसलिए उन्हें भारत में नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है उनसे पहले हिन्दी साहित्य में मध्यकाल की प्रवृतियाँ मौजूद थी। इसलिए उनसे पहले का साहित्य दुनियावी जरूरतों से बिल्कुल कटा हुआ था। साहित्य का पूरा माहौल प्रेम, भक्ति और अध्यात्म का था इसे अपने प्रयासों से उन्होंने हिन्दी साहित्य को देश की सामासिक संस्कृति की खूबियों के साथ-साथ पश्चिम की भौतक और वैज्ञानिक सोच से लैस करने की भरसक कोशिश की।

भारतेन्दु युग अथवा पुनर्जागरण-काल का उदय हिन्दी-कविता के लिए नवीन जागरण के संदेशवाहिक युग के रूप में हुआ था, किंतु इसके सीमांकन के सबंध् में विद्वानों में मतभेद है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भारतेन्दु हरिचंद्र (1850-1885) के रचनाकाल को दृष्टि में रखकर संवत 1925 से 1950 की अवधि को नयी धारा अथवा प्रथम उत्थान की संज्ञा दी है और इस काल को भारतेन्दु हरिश्चंद्र तथा उनके सहयोगी लेखकों के कृतित्व से समृद्ध माना है। किंतु उनके द्वारा निर्धारित कालावधि से कुछ अन्य लेखकों को वेमत्य है। मित्राबंधुओं ने 1926-1957 वि0 तक, डॉ. रामकुमार वर्मा ने 1927/1957 वि0 तक, डॉ. केसरी नारायण शुक्ल ने 1922-1957 वि0 तक और डॉ.0 रामविलास शर्मा ने 1925-1957 वि0 तक भारतेन्दु युग की व्याप्ति मानी है। यह उल्लेखनीय है कि भारतेन्दु द्वारा संपादित मासिक पत्रिका "कविवचन सुधा" का प्रकाशन 1868 ई0 में आरंभ हुआ था। अतः भारतेन्दु-युग का उदय 1868 ई0 (1925 वि0) से मानना उचित हैं। इसकी तर्क का अनुसरण करते हुए 'सरस्वती' के प्रकाशन-वर्ष (1900 ई0) को भारतेन्दु-युग की परिसमाप्ति का सूचक माना जा सकता है।[2]

भारतेन्दु-युग का नवीन परिवेश

आलोच्य युग में जनचेतना पुनर्जागरण की भावना से अनुप्राणित थी। फ्रफलस्वरूप समाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों में न केवल अतिरिक्त सक्रियता थी, अपितु इस सब में गहन अंतः संबंध् विद्यमान था। भारतेन्दुयुगीन कवि- कत्तव्य पर इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इसकी परिणति विषय-चयन में व्यापकता और विविध्ता के रूप में हुई। श्रृंगारिक रसिकता अलंकरण-मोह, रीति-निरूपण य प्रकृति का

www.ignited.in

उद्दीपनात्मक चित्राण प्रभुति रीतिकालीन प्रवृतियों का महत्व क्रमशः कम होता गया और भक्ति और नीति को प्रमुख वण्य विषयों के रूप में ग्रहण करने का आग्रह भी नहीं रह गया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने जनता को उद्बोधन प्रदान करने के उद्येश्य से जातीय संगीत, अर्थात् लोकगीत की शैली पर समाजिक कविताओं की रचना पर बल दिया।[3]

मातृभूमि-प्रेम,स्वदेशी वस्तुओं का व्यवाहर, गोरक्षा, बाल-विवाह-निषेध्, शिक्षा प्रसार का महत्व मद्य-निषेध, भ्रूण-हत्या की निंदा आदि विषयों को कविगण अधिकाधिक अपनाने में लगे थे। राष्ट्रीय भवना का उदय भी इस काल की अन्नय विशेषता है। ब्रर्सिमाज, प्रार्थनासमाज, आर्यसमाज, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद के विचारों तथा थियासॉफ्रिफकल सोसाईटी के सिद्धांतों का प्रभाव भी जनजीवन पर पड़ रहा था। आर्थिक औद्योगिक और धार्मिक क्षेत्रों में पुनर्जागरण की प्रक्रिया आरंभ होने लगी थी।[4]

भारतेन्दु जी ने काव्य भाषा को भी परिष्कृष्त किया। इन्होंने व्यवहार में न आने वाले प्राचीन शब्दों जैसे चक्कवै, ढायों, दीह, उनो, लोम आदि को, जिनके कारण सामान्य जनता की कविता में रूची नही रही थी, को दूर किया। साथ ही शब्दों की तोड़-मरोड़ का दोष भी दूर कर दिया। पुरानी परिपाटी की चलती कविताओं के स्थान पर अपने रसीले कविता और रवैये चलती व्यवहार की भाषा में हिन्दी कविता को दिये। इस कारण इनकी रचना इन्हीं के समय में अत्यंत लोकप्रिय हो गई।

इनके समय में हिन्दी नवीन विचारधारा से दूर थी। लोगों की रूचि के साथ साहित्य नही बदला। शिक्षित लोग स्वयं तो कुछ आगे बढ आये परंतु साहित्य को आगे नही बढ़ा सकें। साहित्य तथा विचार क्षेत्रा और कार्य क्षेत्रा अलग न चलकर साथ ही अग्रसर होने चाहिए तभी देश की उन्नती होती है। इसके दो कारण थे एक तो लोग नई शिक्षा से प्रभावित होकर समय की गति देश की आवश्यकताओं का समझते थे परंतु उर्दू के बीच में पड़ जाने से हिन्दी से अलग से हो गये थे दूसरे जिनमें विचारों से अलग से हो गये थे। दूसरे जिनमें विचारों की प्रेरणा, जाग्रति तथा स्फ्रफूर्ति थी उन्हें नवीन विचारेां को सान्निविष्ट करने के लिए हिन्दी का क्षेत्रा सीमित दिखाई पड़ा। ऐसे समय पर इन कठिनाईयों को दूर करने के लिए एक सामंजस्य पटु, साहसी, प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति की आवश्यकता थी। भारतेन्दु जी ने यह कठिन कार्य-भार संभाला।[5]

काव्यधारा:-

भारतेन्दु युगीन कवियों का काव्यफ्रफलक अत्यंत विस्तृत है। उनकी रचना-प्रवृत्तियाँ एक ओर भक्तिकाल और रीतिकाल से अनुबद्ध है तो दूसरी ओर समकालीन परिवेश के प्रति जागरूकता का भी उनमें अभाव नही है। प्रवृत्तिमूलक विश्लेषण के लिए उनके कत्र्तव्य पर इन शीर्षकों के अंतर्गत विचार करना उचित होगा-राष्ट्रीयता, समाजिक चेतना, भक्ति-भावना, श्रृंगारिकता, प्रकृति चित्राण हास्य-व्यंग्य, रीति-निरूपण, समस्यापूर्ति, काव्यानुवाद, कलापक्ष।

राष्ट्रीयता:-

भारतीय वीरों में प्रताप, छत्रासाल शिवाजी आदि ने क्षेत्रा विशेष ;चितौड़, बुंदेल खंड और महाराष्ट्रद्ध की रक्षा के लिए जिस तत्परता और वीरता का परिचय दिया था उसका स्तवन करने वाले भूषण प्रभृति कवि क्षेत्रीय भावना अर्थात् संकीर्ण राष्ट्रीयता से उपर नहीं उठ सके थे।

भारतेन्दु युगीन कवियों में भारतीय इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों की स्मृति तो अनेक बार दिलायी, पर उनकी राष्ट्रीय भावना केवल यही तक सीमित नहीं रहीं। अंग्रेजों की विचारधारा और उनकी देशभक्ति कवितओं से भी उन्होंने यथेष्ठ प्रेरणा ली, जिसका फ्रफल यह हुआ कि क्षेत्रीयता से उपर उठकर वे संपूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे। हमारे उत्तम भारत देश राधाचरण गोस्वामीद्ध और धन्य भूमि भारत सब रतननि का उपजावनि (प्रेमधन) आदि काव्य पंक्तियों इसी तथ्य को प्रकट करती है।[6]

भारतेंदु की विजमिनी, विजय, वैजंती प्रेमधन की आनंद अरूणोदय, प्रतापनारायण मिश्र की 'महापर्व' और नयासवंत तथा राधाकृष्ण दास की 'भारत बारहमासा' और 'विनय' शीर्षक कविताएँ देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त है। इस संदर्भ में उन्होने अपने प्रतिपाद्य को कहीं व्यंयोक्तियों के माध्यम से प्रकट किया है तो कहीं अतीत के प्रेरणादायी प्रसंगों की चर्चा द्वारा नवयुवकों को पुनर्जागरण का मंत्रा दिया है। अंग्रेजी शोषण-नीति का भारतेन्दु द्वारा प्रत्यक्ष उल्लेख इस भावना की चरम परिणति हैः-

भीतर-भीतर सब रस चूसैं, हँसि-हँसि के तन-मन धन **मूसै।**

जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज।।[7]

प्रेमधन ने 'हार्दिक हर्षादेर्श' कवित में इस स्वार्थपूर्ण शासन प्रक्रिया के लिए भी ईस्ट इंडिया कंपनी को दोषी ठहराया है, अन्यथा उससे शासनाध्किार लेने वाली रानी विक्टोरिया के विषय में तो उन्होंने यह मत व्यक्त किया है:- किय सनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथन। वास्तव में भारतेन्दु युग की राष्ट्रीयता चिंतनधारा दो पक्ष है- देशप्रेम और राजभक्ति। प्रथम पक्ष के अंतर्गत उन्होंने हिन्दी-हिंदु-हिंदुस्तान का गुणगान किया।

'चहहु जु सांचहु निज कल्यान, तौ सब मिलि भारत सन्तान।

जपो निरन्तर एक जवान, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।।[8]

प्रतापनारायण मिश्र।

सामाजिक चेतना:-

भारतेंदु युग की मुख्य विशेषता यह है कि कवियों ने समाजिक जीवन की उपेक्षा न कर जनता की समस्याओं के निरूपण की ओर पहली बार व्यापक रूप में ध्यान दिया। इसके पूर्व रीतिकाल में राजाओं और सामंतो के आश्रय में लिखित दरबारी काव्य में सामाजिक परिवेश के चित्राण की ओर नगणय रूप में ध्यान दिया गया था। इसलिए भारतेंदु युग में नारी-शिक्षा विध्वाओं की दुर्दशा, अस्पृश्यता आदि को लेकर जो सहानुभूतिपूर्ण कविताएँ लिखी गई उनके प्रतिपाद्य की नवीनता ने रहस्य समुदाय को विशेष रूप से आकृष्ट किया।[9]

भारतेंदु जी ने समाज की समस्याओं को अपनी कविता का विषय बनाया। काव्य का सबंध् रीति-काल से कवि के व्यक्तिगत जीवन के संकीर्ण क्षेत्रा से ही रह गया था। भारतेंदु ने व्यक्ति ओर समाज का फर सबंध् दृढ़ किया। भारतेंदु ने भारत-दुर्दशा नाटक में वर्णाश्रम ध्रम की संकीर्णता का इन शब्दों में विरोध् किया - बहुत हमने फैलाये ध्रम, बढ़ाया छुआछूत का कर्म। मन की लहर में प्रतापनारायण मिश्र की दृष्टि बाल-विध्वओं की करूण दशा की ओर गया हैः कौन करे जो नहि कसकत सुनि बिपत्ति बालाबिध्वन की अभिप्राय यह है कि समाजिक परिवेश के चित्राण में कुछ कवियों की दृष्टि सुधारवादी थी, तो कुछ प्रायः यथास्थितिवादी भी थे।[10]

भक्ति भावना:- भारतेंन्दु-युग में परंपरागत धार्मिकता और भक्ति भावना को अपेक्षाकृत गौण स्थान प्राप्त हुआ है, फ्रिफर भी इस काल के भक्तिकाव्य को तीन वर्गो में विभाजित किया जा सकता है- निर्गुण भक्ति वैष्णव भक्ति और स्वदेशानुराग-समन्वित ईश्वर भक्ति। इनमें से प्रथम दो में किसी उल्लेखनीय नवीनता का परियच न देकर मध्युगीन परिपाटी का अनुसरण मात्रा किया गया, किंतु भक्ति और देशप्रेम को एक ही समकोण पर प्रतिष्ठित करना किसी सीमा तक संवेदना की मौलिकता का परिचायक है। निर्गुण भक्ति इस काल की मुख्य साध्ना- दिशा नहीं थी। फ्रफलस्वरूप कुछ कवियों ने परंपरा के प्रभावस्वरूप संसार की नश्वरता माया-मोह की व्यर्थता[11]

सांझ सवेरे पंछी सब क्या कहते है कुछ तेरा हैं। हमस ब इक दिन उड़ जाएगें, यह दिन चार बसेरा है।।

भारतेंदु हिरशचंद्र।

साधे मनुवा अजब दिवाना

माया मोह जनम के ठगिया, तिनके रूप भुलाना।।

प्रतापनारायण मिश्र

श्रृंगारिकता:- भारतेंदु और उनके समकालीन कवियों ने रस को काव्य की आत्मा मानकर अपनी रचनाओं में विविध् रसानुभूतियों का भावन किया है, जिनमें श्रृंगार रस सर्वप्रमुख है। भारतेन्दु ने प्रेम सरोवर' 'प्रेम माधुरी' 'प्रेम तरंग' प्रेम फुलवारी, आदि में भक्ति श्रृगांर और विशुद्ध श्रृंगार दोनों का समावेश किया है। प्रेमधन की युगलमंगल स्त्रोत्रा तथा वर्षा-बिंदु भी इसी प्रकार की रचनाएँ है।

भारतेन्दु के प्रेमदशा वर्णन संबंधी अनेक सवैया ने घनानंद जैसी सरसता विद्यमान है। उदाहरण:-

आज लौं न मिले तो कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं।

मेरो उराहनौं है कुछ नाहिं सबै फ्रफल आपुने भाग को पावैं।।

जो हिरचंद भई सो भई अब प्रान चले चहैं तासों सुनावैं।

प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समै सब कंठ लगावै।।[12]

प्रकृति-चित्राण:

प्राकृतिक सौंदर्य का स्वच्छंद वर्णन भारतेन्दु युगीन कविता का अंगभुत विशेषता है, किंतु अध्कितर कवियों ने परंपरा-निर्वाह ही किया है। भारतेंदु जी ने कविता में नर प्रकृति का ही वर्णन करके उनके मनोविकारों को तीव्र यथा परिष्कृत करने का उद्योग किया। इन्होनें प्रकृति को सवर्श नहीं किया। मानव समाज के सीमित क्षेत्रा में ही उसका अध्ययन किया। उनको प्रकृति के विस्तृत क्षेत्रा में ले जाने का प्रयास बहुत कम किया।[13] भारतेंदु ने सत्य हरिश्चंद्र नाटक में गंगा-वर्णन और चंद्रवली नाटक में यमुना-वर्णन किया तो है, किंतु अंलकार भार के कारण इनमें उनकी स्वत्रांत अनुभूति की क्षमता बहुत कुछ दब सी गई है।

भाषायी-चेतना:- भारतेंदु युगीन काव्यादर्श में महत्वपूर्ण स्थान भाषा का है। उर्दू को प्राप्त शासकीय संरक्षण के संदर्भ में हिन्दी को उसका दाय दिलाने के लिए भारतेन्दु द्वारा विचरित हिन्दी भाषा केवल राजनीतिक कारणों से प्रेरित रचना नहीं थी, अपितु

www.ignited.in

तत्कालीन साहित्यक भाषा में उर्दु फ्फारसी की जटिल तत्सम पदावली का बहिष्कार भी इसी रचना की देन है। यो भारतेंदु उर्दू के एंकात विरोधी नहीं थे। फूलों का गुच्छा में उन्होने शब्दावली के प्रचुर प्रयोग किया है।

भाषा संरचना के दृष्टिकोण से यद्यपि इस युग के किसी भी कवि की ब्रजभाषा पद्याकर और घनानंद की काव्यभाषा के समान परिष्कृत नही, किंतु इसके साथ ही अनेक रीतिकालीन कवियों की भांति भाषा को कला कला के लिए सिद्धांत के अनुरूप शब्दजाल का जामा पहनाना भी अभीष्ट नही रहा।[14] भारतेन्दु का भाषा तथा साहित्य दोनों ही वस्तुओं पर परिवर्तनशील प्रभाव पड़ा। आदर्श परम्परा की स्थापना का श्रेय भारतेन्दु जी को ही प्राप्त है, इसी कारण यह युग-प्रर्वत्तक कहलाये।

निष्कर्ष:

हिन्दी गद्य-साहित्य के विकासक्रम में भारतेन्दु युग के गद्य-साहित्य का महत्व और मूल्य असाधारण है। इसी युग में हिन्दी प्रदेश में आधुनिक जीवन चेतना का उन्मेष हुआ। मध्यवर्गीय सामाजिक परिवेश में साहित्य रचना का जो रूप उभरा उसमें कही कही सामंतीय संस्कारों का अवशेष लक्षित अवश्य होता है। गद्य की प्रायः सभी विधाओं का सूत्रापात्रा इसी युग में हुआ, विशेषतः निबंध् और नाटकः- इन दो विधाओं में लेखकों को अभूतपूर्व सफ्फलता प्राप्त हुई। भारतेंदु युग में अर्थात उन्नीसवीं सदी के अंतिम चरण में पूरे देश में सांस्कृतिक जागरण की लहर दौड़ चुकी थी। सामंतीय सामाजिक ढांचा टूट चुका था। अंग्रेजी शिक्षा के विकास की गति चाहे जितनी धीमी हो रही हो और उसके उदेश्य चाहे जितने सीमित रहें हो उसका व्यापक प्रभाव देश के शिक्षित समाज पर पड़ रहा था। देश में शशक्त मध्यवर्ग तैयार हो गया था जो अध्याध्कि संवेदनशील था। यह वर्ग व्यापक राष्ट्रीय एवं सामाजिक हितों की दृष्टि से सोचने लगा था। और यह अनुभव करने लगा था कि सभी दृष्टियों से हमारा देश अत्यंत हीनावस्था में है जीवन के सभी क्षेत्रों सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक- में परिवर्तन और सुधार की आवश्यकता है। भारतेंदु इसी प्रगतिशील चेतना के प्रतिनिधि थे।

भारतेंदु ने हिन्दी भाषा और इसके साहित्य को आधुनिक युग के साथ नवीन भावनाओं और विचार धाराओं के साथ चला दिया। जीवन और साहित्य की विलगता को दूर करके नई रूची और भावनाओं की प्रतिष्ठा की। इसी कारण यही हिन्दी गद्य के प्रर्वत्तक कहलाए। वास्तव में भारतेन्दु ने भाषा के स्वरूप की समस्या का समाधान करके हिन्दी भाषा का महान उपकार किया जिसके लिए हिन्दी साहित्य सदैव इनका ट्टणी रहेगा।

संदर्भ सूची

1. चिन्तामणि: प्रो. कृष्णलाल एम.ए. पृ-77
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र पृ-437
3. कविवचनसुधा: मई-1879: भारतेंदु हरिशचंद्र की विज्ञाप्ति।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र, डॉ. हरदयाल पृ-439
5. चिन्तामणि - विवेचनः- प्रो. कृष्णलाल एम.ए. पृ-79
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र पृ-440
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र पृ-440
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र , डॉ. हरदयाल पृ-440ऋ 441
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र पृ-441
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र पृ-441
11. हिन्दी साहितय का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र, डॉ. हरदयाल पृ 442
12. हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ. नगेन्द्र पृ-444
13. चिन्तामणि-विवेचन: प्रो. कृष्णलाल पृ-83
14. हिन्दी साहितय का इतिहास: डॉ. नागेन्द्र पृ-449.

Corresponding Author

Dr. Priyanka Kumari*

M.A., Ph.D., University Hindi Department, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur